कृष्ण जन्माष्टमी - 4 सितम्बर 2026

लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा

सद्गुरु शक्तिपात - लक्ष्य चेतना का जागरण

‘क्लीं’ केवल एक बीजाक्षर नहीं है, बल्कि यह आकर्षण, एकाग्रता, संकल्प शक्ति और लक्ष्य से आत्मा के मिलन का दिव्य स्पन्दन है। जब यह बीज मंत्र सद्गुरु की चेतना से अभिमन्त्रित होकर शक्तिपात के माध्यम से शिष्य के भीतर प्रतिष्ठित होता है, तब साधक के भीतर बिखरी हुई ऊर्जा एक केन्द्र पर एकत्रित होने लगती है। उसकी इच्छाएं संयमित होती हैं, मन स्थिर होता है और जीवन लक्ष्य की दिशा में गति प्राप्त करता है।

संसार में वही व्यक्ति सफल होते है जिनके कर्म में लक्ष्य की स्पष्टता, श्रद्धा और दिव्य मार्गदर्शन जुड़ा होता है, तभी वह सिद्धि का माध्यम बनता है। लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा इसी आन्तरिक रुपान्तरण का प्रारम्भ है।

सद्गुरुदेव ही शिष्य की सुप्त चेतना को स्पर्श द्वारा जाग्रत करते है। शक्तिपात का वास्तविक अर्थ है सद्गुरु की जाग्रत आध्यात्मिक ऊर्जा का शिष्य के अन्तःकरण में प्रवाह है। लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा के प्रभाव से ✻ साधक के निर्णयों में स्पष्टता आती है ✻ समय का सदुपयोग होने लगता है ✻ आलस्य और भ्रम कम होने लगते हैं ✻ आत्मविश्वास बढ़ता है ✻ परिस्थितियों से संघर्ष करने का साहस विकसित होता है ✻ जीवन ऊर्जा व्यर्थ के विचारों में नष्ट न होकर लक्ष्य की दिशा में प्रवाहित होती है।

सद्गुरु की कृपा से सम्पन्न लक्ष्य सिद्धि क्लीं दीक्षा साधक को यह अनुभव कराती है कि वह अकेला नहीं है। उसके प्रत्येक शुभ संकल्प में गुरु-शक्ति का संरक्षण विद्यमान है। यही विश्वास कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उसे विचलित नहीं होने देता। जब संसार के मार्ग बंद दिखाई देते हैं, तब गुरु-चेतना भीतर नया मार्ग प्रकाशित करती है।

लक्ष्य की प्राप्ति केवल गति से नहीं, सही दिशा से होती है। दिशा देने वाले सद्गुरु है, गति देने वाली साधना है और सफलता का आधार निरन्तर कर्म है। जब ये तीनों एक साथ जुड़ जाते हैं, तब लक्ष्य सिद्धि केवल संभावना नहीं, बल्कि निश्चित परिणाम बन जाती है।

जहां सद्गुरु की कृपा, साधना की निरन्तरता और लक्ष्य की पवित्रता एक हो जाती है, वहीं ‘क्लीं’ की दिव्य शक्ति साधक के जीवन को लक्ष्य सिद्धि की पूर्णता तक पहुंचा देती है।

– लक्ष्य सिद्धि ‘क्लीं’ दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-